भारत सरकार

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2881

बुधवार, 6 अगस्त, 2025 को उत्तर दिए जाने के लिए

भूकंपीय क्षेत्र को सूक्ष्म जोन में बांटना

†2881. श्री धवल लक्ष्मणभाई पटेल:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) उन शहरों की संख्या संबंधी ब्यौरा क्या है जिनके लिए भूकंपीय क्षेत्र को सूक्ष्म जोनों में बांटने का कार्य पूरा कर लिया गया हैं;

(ख) क्या नगर योजना विभागों को भू-उपयोग क्षेत्रीकरण हेतु इस डेटा का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) स्थानीय प्राधिकारियों को भूकंपीय डेटा के प्रसार के लिए ओपन-एक्सेस प्लेटफार्म सृजित करने संबंधी योजनाओं का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) भूकंपीय क्षेत्र को सूक्ष्म जोनों में बांटने के लिए दिल्ली, बेंगलुरु, कोलकाता, गुवाहाटी, जबलपुर, देहरादून, अहमदाबाद, गांधीधाम और सिक्किम राज्य को कवर किया गया है। चेन्नई, कोयंबटूर, भुवनेश्वर और मैंगलोर जैसे शहर भी इसमें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, पटना, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर, मेरठ, आगरा, धनबाद और अमृतसर जैसे शहरों में भी भूकंपीय क्षेत्र को सूक्ष्म जोनों में बांटने का कार्य अंतिम चरण में हैं। भूकंपीय क्षेत्र को सूक्ष्म जोनों में बांटने का डेटा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के माध्यम

से तैयार किया जाता है और यह पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा तैयार दिशानिर्देशों पर आधारित है।

(ख) भूकंपीय क्षेत्र को सूक्ष्म जोनों में बांटने का अध्ययन और उसके परिणाम राज्य/राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों और भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के साथ साझा किए जाते हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण जागरूकता अभियान चलाता है और भूकंपरोधी डिज़ाइन के लिए बीआईएस द्वारा अनुमोदित दिशानिर्देशों और निर्माण पद्धतियों को बढ़ावा देता है।

(ग) राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र भूकंपीय क्षेत्र को सूक्ष्म जोनों में बांटने के लिए जीआईएस-आधारित जोखिम उत्पाद प्रदान करता है। सूक्ष्म जोनों में बांटने के डेटा के लिए औपचारिक, उपयोगकर्ता-अनुकूल ओपन एक्सेस प्लेटफ़ॉर्म अभी तक स्थापित नहीं किए गए हैं। हालाँकि, भारत और उसके आस-पास के क्षेत्रों में भूकंप आने के तुरंत बाद, वेबसाइट, एक्स, व्हाट्सएप, ऐप, फेसबुक आदि जैसे विभिन्न सोशल मीडिया के माध्यम से भूकंप मापदंडों की जानकारी सार्वजनिक रूप से साझा की जाती है।

*****